मोक्ष

1.10.15

"उपवास" करके के शरीर का त्याग करना याने शरीर को "आत्मा" छोडने के लीये "मजबुर" करना है, आत्मा स्वेच्छा से शरीर से मुक्त हो तो वह "मोक्ष" है, शरीर छोडकर ध्यान करने का अभ्यास करने वाले साधको को यह सहजता से संभव है,

बाबा स्वामी
1/10/15

मेलबॉर्न

15.10.15

❀ मित्र ❀

"मित्र" सदैव अपने स्तर का ही हो तो ही वह स्थायी होता है।

बाबास्वामी –
15/10/15

सिंगापुर

16.10.15

आत्मा

आत्मा से पास का कौनसा मीत्र हो सकता है। अपने आत्मा को मित्र बनाओ वह स्थायी है।

बाबा स्वामी
16|10|15

बाबा स्वामीधाम
बुधवार
28-10-15

❀ समर्पण भाव ❀

समर्पण भाव लो केवल
"आत्मअनुभुती" से ही
आता है।

"आत्म अनुभुती" आत्मभाव
बढाती है।

बाबा स्वामी
28|10|15

गुरुवार
29-10-15

❀ श्रद्धा ❀

हमारी श्रद्धा "आत्म अनुभुती" होने पर हो तो ही वह "स्थायी" होती है।

क्योकी वह "आत्म श्रद्धा" होती है। "अंधश्रद्धा" नही

बाबा स्वामी
29|10|15

श्री. बाबा स्वामी धाम-नवसारी

शुक्रवार
30-10-15

❀ परमात्मा ❀

"परमात्मा" अपनी उपस्थीती
"अनुभुती" के माध्यम से
दर्ज कराता है।
अनुभुती तो "आत्मा" को
ही होती है, शरीर तो
बस एक "माध्यम" है।

बाबास्वामी
30|10|15

शनीवार
31-10-15

❀ विश्वचेतना ❀

सामुहिक आत्माओं का
समुह "परमात्मा" है।
वह एक "विश्वचेतना"
है।

स्वामी
31/10/15